Gc – एलिय्याह पहले ही आ चुका है, और उन्होंने उसे नहीं
पहचाना मत्ती १७:९-१३; मरकुस ९:९-१३; लूका ९:३६b | 1

– Save This Page as a PDF–

एलिय्याह पहले ही आ चुका है, और उन्होंने उसे नहीं पहचाना

मत्ती १७:९-१३; मरकुस ९:९-१३; लूका ९:३६b

खोदाई: मसीह प्रेरितों को चुप क्यों कराते हैं? परिवर्तन की खबर इस्राएल राष्ट्र को कब बताई जाएगी? यीशु गवाह के रूप में किसे आमंत्रित करते हैं? केवल तीन ही क्यों? ये तीन क्यों? आज के यहूदी अभी भी दो मसीहा पर विश्वास क्यों करते हैं? शिष्यों ने युहन्ना बप्तिस्म देनेवाला के बारे में क्या सीखते हैं? यीशु के बारे में?

चिंतन: एक पीड़ित मसीहा की तस्वीर एक विश्वासी के जीवन के बारे में आपके दृष्टिकोण को कैसे आकार देती है? जब येशुआ को सुनने की बात आती है, तो अभी आप सुनने में कितने कठिन हैं? क्या आपके जीवन, आपके परिवार, आपके कार्य वातावरण, आपके पड़ोस में लोग जानते हैं कि आप विश्वासी हैं? या क्या आप यह बात अपने तक ही सीमित रखते हैं और किसी को नहीं बताते? क्यों या क्यों नहीं?

यह एक और गर्मी के दिन की शुरुआती सुबह थी जब मास्टर और उनके प्रेरितों ने एक बार फिर मैदान की ओर अपने कदम बढ़ाए। उन्होंने उसकी महिमा देखी थी, जिसे अन्य यहूदी नहीं देख सकते थे, और उन्होंने तानाख में नई अंतर्दृष्टि प्राप्त की थी। उनके पास नई अंतर्दृष्टि थी जैसी उनके पास पहले कभी नहीं थी, जो उनकी आत्मा के लिए उस सुबह की हवा की तरह थी जिसे उन्होंने उस पहाड़ पर सांस ली थी। हर चीज़ मसीह की ओर इशारा करती थी और उसकी मृत्यु की बात करती थी। शायद उस सुबह, पिछली रात से बेहतर, उन्होंने कुछ बेहतर देखा जो उनके सामने था।

यह स्वाभाविक ही होगा कि उनके विचार भी उनके साथी साथी, जिन्हें उन्होंने नीचे घाटी में छोड़ दिया था, की ओर भटकें। उन्हें कितना कुछ बताना था, यह अद्भुत समाचार सुनकर वे कितने प्रसन्न होंगे! उस एक रात ने बहुत सारे सवालों के जवाब दे दिए, खासकर येरुशलायिम में उनकी अस्वीकृति और हिंसक मौत के बारे में। इससे तीन विशिष्ट प्रेरितों के लिए भयानक अंधकार में स्वर्गीय प्रकाश भर जाना चाहिए था: फिलिप, जिन्हें अपनी भौतिकवादी, व्यावहारिक, सामान्य ज्ञान संबंधी चिंताओं को अलग रखना और विश्वास की अलौकिक क्षमता को पकड़ना सीखना था; थॉमस, जो विश्वास करने के लिए सबूत चाहता था; और यहूदा, जिसकी यहूदी मसीहा की तीव्र इच्छा रोमनों को उखाड़ फेंकेगी और उसे मसीहाई साम्राज्य में शक्ति और प्रभाव की स्थिति में डाल देगी, उसने पहले ही अपनी आत्मा को भस्म करना शुरू कर दिया था। फिलेप्पुस के हर

Gc – एलिय्याह पहले ही आ चुका है, और उन्होंने उसे नहीं
पहचाना मत्ती १७:९-१३; मरकुस ९:९-१३; लूका ९:३६b | 2

प्रश्न, थॉमस के हर संदेह और की हर राष्ट्रवादी इच्छा का उत्तर पतरस, याकूब और युहन्ना को जो कहना था, उससे दिया जाएगा।

लेकिन ऐसा नहीं होना था. इसे जाहिर नहीं किया जाना था। जाहिर है, इसकी जानकारी अन्य प्रेरितों को भी नहीं दी जानी थी। ऐसा लगता है कि यीशु ने सोचा कि यदि वे इसे देखने के योग्य नहीं हैं, तो वे इसे सुनने के लिए भी तैयार नहीं हैं! ये पक्षपात का मामला नहीं था। ऐसा इसलिए नहीं था क्योंकि पतरस, याकूब और युहन्ना को बेहतर प्यार किया गया था, बल्कि इसलिए कि वे बेहतर तैयार थे – अधिक पूरी तरह से ग्रहणशील, अधिक आसानी से स्वीकार करने वाले, अधिक पूरी तरह से आत्म-समर्पण करने वाले।

मसीह की अस्वीकृति के बाद राष्ट्र के प्रति चुप्पी की नई नीति को ध्यान में रखते हुए (En– मसीह के मंत्रालय में चार कठोर परिवर्तन देखें), यीशु ने उन्हें चेतावनी दी कि वे हर्मन पर्वत पर जो कुछ उन्होंने देखा था उसके बारे में किसी को न बताएं। परिवर्तन के बाद जब वे पहाड़ से नीचे आ रहे थे, यीशु ने उन्हें निर्देश दिया: जो कुछ तुमने देखा है उसे किसी को मत बताना। हां, येशुआ ही एक था, लेकिन यह आने वाले राज्य के संबंध में यहोवा के समय का मामला होगा। रूपान्तरण की सच्चाई को आम जनता के सामने प्रकट करने का उचित समय होगा, और वह समय मनुष्य के पुत्र को मृतकों में से जीवित किये जाने के बाद होगा (मती १७:९; मरकुस ९:९)।

यह अपमान की घाटी में मसीह का पहला कदम था और यह एक परीक्षा थी। क्या उन्होंने हेर्मोन पर्वत पर दर्शन की आध्यात्मिक शिक्षा को समझा था? ख़ैर, उनकी आज्ञाकारिता इसका प्रमाण होगी। लेकिन इससे भी अधिक, उनकी अधीनता इतनी दूरगामी थी कि उन्होंने अपने स्वामी से एक नए और प्रतीत होता है कि पहले सुने गए किसी भी रहस्य से भी बड़े रहस्य के बारे में सवाल करने की हिम्मत नहीं की: मनुष्य के पुत्र के मृतकों में से जीवित होने का अर्थ। परन्तु अन्य प्रेरितों की तुलना में बेहतर तैयार होने के बावजूद, वे अभी भी अज्ञानी थे। अक्सर हम गलती करते हैं जब हम इन लोगों को केवल प्रेरित के रूप में सोचते हैं, शिष्यों के रूप में नहीं; हमारे शिक्षकों के रूप में, उनके शिक्षार्थियों के रूप में नहीं, उनकी सभी मानवीय असफलताओं और पाप स्वभाव के साथ।

इतना ही नहीं, ५,००० लोगों को खाना खिलाने के बाद, यीशु को इस बात का दुख था कि लोग उन्हें अपनी तरह का राजा बनाना चाहते थे ताकि वे अपने तात्कालिक स्वार्थी और सांसारिक अपेक्षाओं को पूरा कर सकें (Fo– यीशु ने एक राजनीतिक मसीहा के विचार को अस्वीकार कर दिया) । परन्तु जब वे सुनेंगे कि मनुष्य का पुत्र मृतकों में से जीवित हो गया है, तो मसीहा के दो मिशनों की पूरी तस्वीर स्पष्ट रूप से समझ में आ जाएगी। सबसे पहले, मेशियाच बेन जोसेफ को पूरी दुनिया की मुक्ति के लिए कष्ट सहना होगा (निर्गमन Bz– पाप मुक्ति पर मेरी टिप्पणी देखें), और दूसरी बात, केवल तभी मेशियाच बेन डेविड यहोवा के मसीहा साम्राज्य के साथ आएंगे (Mv– दो मसीहा की

Gc – एलिय्याह पहले ही आ चुका है, और उन्होंने उसे नहीं
पहचाना मत्ती १७:९-१३; मरकुस ९:९-१३; लूका ९:३६b | 3

यहूदी अवधारणा देखें) । रूढ़िवादी यहूदी आज भी दो मसीहा की इस अवधारणा में विश्वास करते हैं।

आगे हम बप्तिजक युहन्ना और एलिय्याह भाबिसत्बकता के बीच संबंध के बारे में जो कुछ भी सीखा है उसे अंतिम रूप देने जा रहे हैं। इस बिंदु तक हमने तीन बातें सीखी हैं। सबसे पहले, जब युहन्ना से पूछा गया कि क्या वह एलिय्याह भविष्यवक्ता है, तो उसने कहा, “नहीं, मैं नहीं हूं (यूहन्ना १:२१)। हालाँकि, दूसरी बात, यूहन्ना एलिय्याह की आत्मा और शक्ति में आया था (लूका १:१७)। और तीसरा, यदि इस्राएल के लोगों और महासभा ने मसीहा राज्य की पेशकश स्वीकार कर ली होती, तो युहन्ना ने सभी चीजों को पुनर्स्थापित करने के लिए एलिय्याह के कार्य को पूरा कर दिया होता। हालाँकि, चूँकि मसीहा और उसके प्रस्ताव दोनों को अस्वीकार कर दिया गया था, युहन्ना ने एलिय्याह के कार्य को पूरा नहीं किया। परिणामस्वरूप, एलिय्याह को भविष्यवाणी को पूरा करने के लिए स्वयं वापस आना होगा (प्रकाशितवाक्य Bw– एलिय्याह की वापसी पर मेरी टिप्पणी देखें)।

एलिय्याह को हेर्मोन पर्वत पर देखने के बाद उनका भ्रम एक और प्रश्न की ओर ले गया। प्रेरितों ने उससे पूछा, “तो फिर टोरा-शिक्षक ऐसा क्यों कहते हैं कि एलिय्याह को पहले आना होगा” (मत्ती १७:१०; मरकुस ९:११)? उनकी शिक्षा केवल रब्बी परंपरा पर आधारित नहीं थी बल्कि धर्मशास्त्रीय शिक्षा पर आधारित थी। मलाकी ४:५-६ का वादा था कि एलिय्याह प्रथम आगमन से पहले आएगा। और मलाकी ने प्रथम आगमन से पहले आने वाले एक अज्ञात अग्रदूत के बारे में बताया। “देखना! मैं अपने दूत को मेरे सामने मार्ग साफ़ करने के लिये भेज रहा हूँ; और प्रभु, जिसे तुम ढूंढ़ते हो, वह अचानक अपने मन्दिर में आएगा। हाँ, वाचा का दूत, जिससे तुम इतना प्रसन्न होते हो – देखो! वह यहाँ आता है,” स्वर्ग की देवदूत सेनाओं के प्रभु कहते हैं (मलाकी ३:१)। दो आने का प्रोग्राम उन्हें समझ नहीं आया.

यीशु ने टोरा-शिक्षकों की शिक्षा की पुष्टि की क्योंकि उन्होंने पवित्रशास्त्र लिखा (यूहन्ना १:१-१४)। यीशु ने उत्तर दिया: निश्चित रूप से, एलिय्याह पहले आएगा, और सभी चीजों को पुनर्स्थापित करेगा (मती १७:११; मरकुस ९:१२बी)। यह इस तथ्य का एक और स्पष्ट संकेत था कि यीशु को टोरा से कभी कोई समस्या नहीं थी। उन्होंने केवल मौखिक ब्यबस्था पर आपत्ति जताई (देखें Ei – मौखिक ब्यबस्था) क्योंकि यह केवल पुरुषों की परंपराएं थीं (मरकुस ७:८)। इसलिए, उसका इससे कोई लेना-देना नहीं होगा।’

हालाँकि, उनके प्रश्न का मुद्दा यह था कि, यदि एलिय्याह प्रथम आगमन से पहले आया और उसने पुनर्स्थापना का कार्य किया, तो क्या इसका मतलब यह होगा कि मसीहा के कष्टों की भविष्यवाणियाँ पूरी नहीं होंगी? फिर एक अच्छा रब्बी होने के नाते, यीशु ने सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न पूछा। फिर यह क्यों लिखा है कि मनुष्य के पुत्र को बहुत कष्ट सहना होगा और अस्वीकार किया जाना चाहिए (मरकुस ९:१२बी)? ये था आदेश

Gc – एलिय्याह पहले ही आ चुका है, और उन्होंने उसे नहीं
पहचाना मत्ती १७:९-१३; मरकुस ९:९-१३; लूका ९:३६b | 4

पहले आगमन पर मसीह को बहुत कष्ट सहना पड़ेगा, फिर एलिय्याह सभी चीजों को पुनर्स्थापित करने के लिए आएगा, फिर वह दूसरे आगमन के बाद अपना मसीहा साम्राज्य स्थापित करेगा।

परन्तु मैं तुम से कहता हूं, ऐसा प्रतीत होता
है, कि एलिय्याह पहले ही आ चुका है, और उन्होंने उसे नहीं पहचाना, परन्तु उसके साथ जो चाहा, वैसा किया, जैसा उसके विषय में लिखा है (मत्ती १७:१२ए; मरकुस ९:१३ए)। मलाकी ने दो अग्रदूतों का वादा किया – केवल एक ही नहीं: एक अनाम प्रथम आगमन से पहले, या युहन्ना बप्तिस्म देनेवाला, और एक नामित व्यक्ति दूसरे आगमन, या एलिय्याह से पहले। तो युहन्ना एलिय्याह का एक प्रकार था क्योंकि वह प्रथम आगमन का अग्रदूत था। इस अर्थ में, एलिय्याह पहले ही आ चुका था क्योंकि युहन्ना उसका एक प्रकार था, या उसका पूर्वाभास था। इसके अलावा, युहन्ना एलिय्याह की आत्मा और शक्ति में आया था।

फिर भी उन्होंने यूहन्ना को मार डाला, और उसी प्रकार मनुष्य के पुत्र को भी उनके हाथों कष्ट सहना पड़ा (मत्ती १७:१२बी; मरकुस ९:१३बी)। यीशु अपने अनुयायियों की सभी पूर्वकल्पित धारणाओं और विचारों को पलट रहा था। उन्होंने एलिय्याह के उद्भव, मसीहा के आगमन, समय के साथ अडोनाई के विनाश और स्वर्ग की विनाशकारी जीत की तलाश की, जिसे उन्होंने इज़राइल की विजय के साथ पहचाना। येशुआ उन्हें यह देखने के लिए मजबूर करने की कोशिश कर रहा था कि वास्तव में हेराल्ड को क्रूरता से मार डाला गया था और मसीहा को क्रूस पर समाप्त होना चाहिए। लेकिन वे अभी भी नहीं समझ पाए, और समझने में उनकी विफलता उस कारण से थी जो हमेशा लोगों को समझने में असफल बनाती है – वे अपने रास्ते पर अड़े रहे और प्रभु के रास्ते को देखने से इनकार कर दिया। उन्होंने चीज़ों की कामना वैसे ही की जैसे वे चाहते थे, न कि उस तरह जैसे प्रभु ने उन्हें ठहराया था। याद रखें, जो दूत के साथ होगा वही राजा के साथ भी होगा।

आज भी, कई यहूदी सवाल करते हैं कि येशुआ सच्चा मसीहा कैसे हो सकता है, अगर उसने स्पष्ट रूप से मसीहा साम्राज्य की स्थापना नहीं की है। लेकिन मेशियाच बेन डेविड के मिशन की पूर्ति तभी साकार होगी जब इज़राइल का नेतृत्व उन्हें उन पर शासन करने

Gc – एलिय्याह पहले ही आ चुका है, और उन्होंने उसे नहीं
पहचाना मत्ती १७:९-१३; मरकुस ९:९-१३; लूका ९:३६b | 5

के लिए वापस आमंत्रित करेगा (मेरी टिप्पणी देखें प्रकाशितवाक्य ईवि – यीशु मसीह के दूसरे आगमन का आधार)।

तल्मूड में एक मर्मस्पर्शी कहानी है जो इस विश्वास को दोहराती है क्योंकि कहा जाता है कि रब्बी जोशुआ बेन लेवी मसीहा की खोज कर रहे थे। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है, उसकी मुलाकात एलिय्याह से होती है जो रब्बी को मेशियाच के पास ले जाता है जो कुछ कोढ़ी लोगों के बीच सेवा कर रहा है। जैसे ही वे एक-दूसरे का अभिवादन करते हैं, रब्बी जोशुआ सबसे महत्वपूर्ण सवाल पूछता है: “आप कब आएंगे, मास्टर?” उसने पूछा। “आज,” मसीहा का उत्तर था। एलिय्याह के पास लौटने पर एलिय्याह ने पूछा, “उसने तुझ से क्या कहा?” “उसने मुझसे झूठी बातें कीं,” वह फिर बोला, “यह कहते हुए कि वह आज आएगा, लेकिन वह नहीं आया।” एलिय्याह ने रब्बी जोशुआ को उत्तर दिया, “उसने तुमसे यही कहा था: आज, यदि तुम उसकी आवाज सुनोगे, तो वह आएगा (भजन संहिता ९५:७, ट्रैक्टेट सैन्हेड्रिन ९८ए में)।

इस बीच, येशु वास्तव में पीड़ित मसीहा से संबंधित सभी वादों को पूरा करेगा जैसा कि वर्णित है (यशायाह ५३)। तब प्रेरितों को समझ आया कि वह उनसे युहन्ना द बैपटिस्ट के बारे में बात कर रहा था। उन्होंने मामले को अपने तक ही सीमित रखा, चर्चा करते हुए कि “मृतकों में से जी उठने” का क्या मतलब है, और उस समय किसी को नहीं बताया कि उन्होंने क्या देखा था (मती १७:१३; मरकुस ९:१०; लूका ९:३६बी)। जैसे-जैसे वे धीरे-धीरे यरूशलेम की ओर बढ़ रहे थे, मसीह का मंत्रालय शिष्यों के लिए अधिक से अधिक फोकस में आ रहा था।